SACRIFICE
316

एक जीवित बलिदान

इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो। रोमियों 12:1-2

आपका बलिदान। अपने शरीरों को एक *"जीवित और पवित्र बलिदान"* बलिदान करके चढ़ाओ, अक्सर इस शिक्षा को गलत समझा जाता है। परन्तु, यीशु मसीह का केवल एक विश्वासी होने से भी बढ़कर होने के लिये, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप को सही मार्ग दिखाया जाये। पहला पद, प्रत्येक विश्वासी को चुनौती देता है कि उद्धार प्राप्त करने के *बाद*, उसे परमेश्वर को एक विशिष्ट बलिदान चढ़ाना है। दूसरे पद में, उस बलिदान को चढ़ाने के *बाद* का जीवन जीने के लिये निर्देश दिए गये हैं। प्रतिदिन अपना क्रूस उठाने के एक भाग के रूप में, प्रतिदिन स्वयं को परमेश्वर को समर्पित करें, लूका 9:23. परन्तु रोमियों 12:1 का यह अभिप्राय नहीं है। इसकी आज्ञा कि, *"अपने शरीरों को"* का अर्थ है *सदा काल के लिये एक ही बार* परमेश्वर के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता, समर्पण, और अधीनता में आ जाओ। यह उद्धार नहीं है। उद्धार तो केवल मसीह के बलिदान पर आधारित है। यह भिन्न है। यह आपका बलिदान है। यह दैनिक बलिदान नहीं है। यह बिना किसी शर्त के अपने जीवन को हमेशा के लिये परमेश्वर को एक जीवित, पवित्र, और स्वीकार्य बलिदान के समान अर्पित कर देना है। यह परमेश्वर की महिमा के लिये और उसके द्वारा निर्बाध उपयोग किये जाने के लिये, आप के द्वारा स्वयं को परमेश्वर को स्वेच्छा से भेंट कर देना है।

यह बलिदान क्यों करें? यह उसकी दया के कारण है। रोमियों अध्याय 1-11 परमेश्वर की दया का वर्णन करते हैं। रोमियों 12:1 आपको बताता है कि उसकी उन दया के कारण आपको क्या करना चाहिये। रोमियों 12:2 आप को दो शिक्षाएँ देता है कि अपने बलिदान को चढ़ाने के *बाद* आपका जीवन कैसा होना चाहिये। उन पहले ग्यारह अध्यायों में आपको बचाने और पवित्र करने में परमेश्वर की महान दया का वर्णन दिया गया है। इसलिये, स्वयं को परमेश्वर को अर्पित करें। वह आपको इस जीवन तथा अनन्त जीवन में आशीषित करेगा। परन्तु, आप के बलिदान के लिये उचित प्रोत्साहन आप के सामने नहीं है। वह आप के पीछे है। आपका उचित प्रोत्साहन उस पर आधारित है, जिसे परमेश्वर पहले ही कर चुका है। कल्पना कीजिये कि यीशु कीलों के निशान वाले हाथ आप को दिखाते हुए कहता है, "मैंने जो कुछ तुम्हारे लिये किया है, उसके बाद अब तुम मेरे लिये यह करो।" रोमियों 12:1 का यही अर्थ है।

एक ही बार का बलिदान क्यों? क्योंकि यही रोमियों 12:1-2 के शब्दों का अर्थ है। यद्यपि 12:2 में क्रियाएँ *"के सदृश न बनो"* तथा *"बदलता जाए"* वर्तमान काल में हैं। इसका अर्थ है कि इन दोनों बातों को अभी करें, और अपने जीवन भर करते रहें। परन्तु, 12:1 में *"अपने शरीरों को चढ़ाओ"* में यूनानी भाषा की सामान्य वर्तमान काल में नहीं हैं। यूनानी में, इसका अर्थ होता है, एक बार में किया गया कार्य। इसका अर्थ उसे करते रहना नहीं होता है। उसका अर्थ होता है हमेशा के लिये एक ही बार कर देना। यह आप के द्वारा निर्णायक रीति से परमेश्वर को प्रतिबद्ध हो जाना है। स्वयं को उसे एक बलिदान के रूप में अर्पित कर दें। रोमियों 12:1 आपके बलिदान के बारे में है। यह आपके द्वारा स्वयं को हमेशा के लिये परमेश्वर की वेदी पर रख देना है।

दो उदाहरण। व्यवस्थाविवरण 15:12-17 इसका एक उदाहरण देता है। स्वतन्त्र कर दिया गया एक इब्री दास यह निर्णय ले सकता था कि वह *स्वेच्छा से* और *हमेशा के लिये* स्वयं को पुनः, अपने स्वामी का दास बना ले। उसका चुनाव, अतीत में उसके स्वामी की दया पर आधारित होता था। अपने स्वामी के प्रति उस दास का प्रेम, उसे इस बात के लिये उभारता था। यह हमेशा के लिये होता था। दास के कान को एक सुतारी से छेदा जाता था, जो इस बात का चिन्ह होता था कि वह जीवन भर के लिये अपने स्वामी का दास है। यह दासत्व उस दास का अपना चुनाव होता था। इसके लिये उसे बाध्य नहीं किया जाता था। यह निर्णय सदा काल के लिये होता था। एक अन्य उदाहरण पुरानी वाचा में पशुओं के बलिदान हैं। वेदी पर रखे जाने के लिये पशुओं को स्वीकार्य होना होता था। एक बीमार या दोष युक्त पशु स्वीकार्य नहीं होता था, लैव्यव्यवस्था 1-5. यह आप के रोमियों 12:1 के पवित्र और स्वीकार्य बलिदान होने को दिखाता है। बलिदान किये गये पशु का मृतक होना, बलिदान के सदा काल का होने को दिखाता है। बलिदान किया हुआ कोई भी पशु, वेदी के गरम होने पर, वेदी पर से रेंगकर उतरता नहीं था। कोई भी याजक दिन की समाप्ति पर किसी पशु को वापस नहीं ले जाता था, कि किसी अन्य दिन उसे फिर से बलिदान चढ़ाये। वह हमेशा के लिये किया गया बलिदान था। यदि आप रोमियों 12:1 के बलिदान को, वेदी के गरम हो जाने पर, वेदी से उतार लेते, तो वह कभी भी रोमियों 12:1 के अनुसार का बलिदान नहीं होता।

अपने बलिदान को दोहराना। क्या आपको कभी भी अपने रोमियों 12:1 के बलिदान को दोहराना चाहिए? हाँ, यदि आप का बलिदान भावता हुआ नहीं था। रोमियों 12:1 के बलिदान को जीवित, पवित्र, और भावता हुआ होना चाहिये था। आप जीवित हैं, क्योंकि, मसीह में विश्वास करने के बाद, आप *"मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुके,"* यूहन्ना 5:24. पवित्र बलिदान होना आपकी ज़िम्मेदारी है। पुराने नियम के पशुओं को बलि चढ़ाए जाने के लिये स्वीकार्य होना होता था। कोई भी पशु सिद्ध तो नहीं हो सकता था। परन्तु उसे निरोग, स्वस्थ, और बिना किसी दोष का होना होता था। यह रोमियों 12:1 के बलिदान के लिये दो बातों को दिखाता है। पहली, आपके बलिदान को निरोग होना चाहिये। पाप के रोग, और परमेश्वर से पृथक होने के रोग को, उद्धार के द्वारा चँगा हुआ होना चाहिये। इसीलिये, रोमियों 12:1 विश्वासियों को लिखा गया है (उस पद में "भाइयों" शब्द के द्वारा इस का संकेत किया गया है)। एक अविश्वासी का बलिदान स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि इसे उद्धार से *पहले* नहीं वरन् उद्धार पाने के *बाद* में चढ़ाया जाना चाहिए। यीशु का अनुसरण करने से पहले आपको यीशु के पास आना होगा। अपने उद्धार के लिये निश्चित होने के लिये, कृपया www.Gospel316.org.पर आएँ। पवित्र होने का अर्थ है कि एक विश्वासी के जीवन के आत्मिक स्तर को एक स्वीकार्य स्तर तक स्वच्छ होना चाहिये। केवल तब ही आपका रोमियों 12:1 का बलिदान परमेश्वर को भावता हुआ होगा। *"यदि कोई अपने आप को इनसे शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बरतन और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिये तैयार होगा,"* 2 तीमुथियुस 2:21. आप सिद्ध नहीं हो सकते हैं। परन्तु आप स्वयं को, एक अर्पित किये जाने योग्य स्तर के आत्मिक स्वास्थ्य और पवित्रता तक, ला सकते हैं। जब एक बार आपका जीवित और पवित्र बलिदान परमेश्वर द्वारा स्वीकार कर लिया जाए, तब उसके बाद आपको उसे फिर कभी चढ़ाने की आवश्यकता नहीं होगी। परन्तु, यदि आपका बलिदान परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं था क्योंकि या तो वह अस्थाई था, या वह पवित्र नहीं था, तो उसे फिर से चढ़ाने की आवश्यकता होगी। स्वयं को स्थाई, जीवित, और पवित्र बलिदान करके चढ़ाएँ। स्वेच्छा से और स्थाई रूप में स्वयं को परमेश्वर का दास बना लें। इस कार्य को हल्के में लेकर न करें। उद्धार पाने के बाद यह एक बहुत गम्भीर निर्णय होता है। जब आपका बलिदान स्वीकार हो जाए, तब फिर, यीशु मसीह के सच्चे अनुयायी के समान, रोमियों 12:2 के अपने संसार के सदृश्य न होने और बदला हुआ जीवन जीने की ओर आगे बढ़ें। उसने आपके लिये जो कुछ किया है, उसके बाद, उसके लिये इसे करें!

आपके बलिदान के बाद का जीवन। *"इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो,"* रोमियों 12:2. यह पद, आपके रोमियों 12:1 के बलिदान के बाद के जीवन के लिये शिक्षाएँ देता है। ये शिक्षाएँ वर्तमान काल में हैं, अर्थात्, मन के निरन्तर नये होते चले जाने से, संसार के सदृश्य न होने और बदलते चले जाने की प्रक्रिया को जारी रखें। इस संसार के पापमय व्यवहार के सदृश्य न हों, उन्हें स्वीकार न करें। एक विश्वासी होने के नाते, संसार को आपको उसके सदृश्य मत करने दें। रोमियों 12:2 आपको शिक्षा देता है कि *"तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए।"* जिस यूनानी शब्द का अनुवाद *बदल जाने* किया गया है, उसी शब्द को मत्ती 17:2 और मरकुस 9:2 में भी प्रयोग किया गया है, जहाँ उसे *रुपान्तर होना लिखा गया है।* रोमियों 12:2 एक शिक्षा है कि आपके मन के नये (नवीनीकरण, बेहतर होने के लिये पूर्ण परिवर्तन) हो जाने के कारण आप भी रूपान्तरित हो जाएँ। स्वरूप का यह बदलना (जो इल्ली के तितली बनने से भी बढ़कर अद्भुत है), आपके द्वारा परमेश्वर के वचन को सीखने और जीने के द्वारा हो पाएगा। अपने रोमियों 12:1 के बलिदान को चढ़ाएँ। संसार के साँचे में ढलने के दबाव मैं न आएँ। परमेश्वर के वचन को सीखते और जीते हुए रूपान्तरित हो जाएँ। तब आप परमेश्वर की इच्छा को समझ, और जी सकते हैं।

"जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।" रोमियों 12:2

एक जीवित बलिदान © 2026 लेखक जॉन डी. मॉरिस III, एक्टस वन ऐट के द्वारा प्रकाशित किया गया है। आप इसकी सामग्री में कोई भी परिवर्तन किये बिना और इस कथन को सम्मिलित करने के साथ, इसे बिना कीमत के छाप सकते हैं, इसकी प्रतिलिपि बना सकते हैं, इसे किसी को भी ईमेल कर सकते हैं, या इस सन्देश के समान भेज सकते हैं। आप पृष्ठ एक के सबसे ऊपर अपनी सेवकाई, या कलीसिया का नाम या लोगो लगा सकते हैं, तथा पृष्ट दो के अन्त में मोटी रेखा के ऊपर, आप से सम्पर्क करने के लिये जानकारी जोड़ सकते हैं। *Sacrifice 316* केवल बाइबल पर आधारित है। इसे लोगों के केवल यीशु में विश्वास करने वाले होने से आगे बढ़कर, उनकी आत्मिक बढ़ोतरी में सहायता करने के लिये तैयार किया गया है। आप एक्टस वन ऐट को ईमेल (यदि सम्भव हो तो अंग्रेज़ी में) भेज सकते हैं: Hello@Mail316.org अनुवाद सुविधाएँ www.ChristianLingua.com द्वारा उपलब्ध कारवाई गई। *एक जीवित बलिदान* मुफ़्त में 48 भाषाओं में www.Sacrifice316.org पर उपलब्ध है। अंग्रेज़ी संस्करण में दिये गए हवाले लॉकमैन फॉउण्डेशन द्वारा न्यू अमेरिकन स्टैन्डर्ड बाइबल 1995 से लिये गये हैं। इस अनुवाद में दिये गये बाइबल के हवाले: HINOVBSI से लिये गये हैं।